परिचय से शुरू हुआ सीखने का सफ़र

कमला बाजपेई

यह आलेख एक प्राथमिक स्कूल में पहली कक्षा के बच्चों और उस कक्षा के शिक्षक के साथ भाषा शिक्षण पर किए गए काम के अनुभव पर आधारित है। इस आलेख में लेखक ने बच्चों के साथ की गई 'परिचय गतिविधि' से बच्चों के पढ़ने-लिखने के कौशल पर पड़े प्रभाव को दर्ज किया है। आलेख में इस गतिविधि के माध्यम से बच्चों में मिल-जुल कर और एक दूसरे के सहयोग से सीखने के तरीक़ों को आधार बनाया गया है। सं.

परिचय गतिविधि के बारे में हमारी सैद्धान्तिक समझ

कक्षा में बच्चे एक दूसरे से परिचित हों, मिल-जुल कर सीखें, सहज और खुला माहौल हो, कक्षा में आपसी परिचय की विभिन्न गतिविधियों के द्वारा बच्चों को ऐसे अवसर उपलब्ध कराए जाएँ जो बच्चों को कक्षा में सीखने का सहज माहौल एवं सीखने को सक्रिय और अर्थपूर्ण प्रक्रिया में तब्दील करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हों। ये प्रक्रियाएँ स्कूल के भीतर बच्चों को शुरुआत में महसूस होने वाले अजनबीपन को दूर करती हैं, परिचय के माध्यम से उन्हें स्कूल और वहाँ के वातावरण को आत्मसात करने में सहज करने, बच्चों को सहपाठियों और शिक्षकों से परिचित कराने के साथ ही उनके लिए आवश्यक विभिन्न भाषाई और संज्ञानात्मक क्षमताओं के विकास के मार्ग भी प्रशस्त करती हैं। इस गतिविधि में हम भाषा शिक्षण हेतु सहज और भयरहित माहौल के निर्माण और मौखिक भाषा से लिखित भाषा की ओर बढ़ने में आरम्भिक गतिविधियों और परिचय गतिविधि की भूमिका और इससे सम्बन्धित कक्षा प्रक्रियाओं को सहज करने का प्रयास करते हैं।

कक्षा में जो कुछ मैंने देखा

वैसे तो बच्चे अपने आसपास के बच्चों को उनके नाम से जानते हैं, लेकिन कुछ नए बच्चों से जब कक्षा में उनकी मुलाक़ात होती है तो वे उनके बारे में जानकारी जुटाने का प्रयास करते हैं। कई बार बच्चे अपने आसपास के बच्चों के साथ अच्छी दोस्ती रखते हैं लेकिन जिनके बारे में नहीं जानते उनसे दूरी बनाते हैं। यह आपसी दूरी उनके सीखने को प्रभावित करती है। ऐसा ही अनुभव रहा कक्षा में बच्चों के साथ पहले दिन की चर्चा में। बच्चे आपस में अपनी जान पहचान वाले बच्चों के साथ समूह बनाकर बैठे थे, जिन बच्चों को नहीं जानते थे उनसे दूरी बनाए हुए थे। कक्षा दो तीन हिस्सों में बँटी दिखाई दे रही थी। जिन बच्चों की पहचान किसी बच्चे के साथ नहीं हो पाई थी वह पीछे चुपचाप बैठे थे। शिक्षक बच्चों को बोर्ड पर काम देकर कक्षा से चले जाते थे और ऑफ़िस के कुछ दूसरे कामों की भूमिका में जुड़ जाते थे। शिक्षक का नाम बच्चे नहीं जानते थे, पर साहू मैडम के नाम से पूरा स्कूल मैडम को जानता था। बच्चे मैडम को देखते ही सहम जाते थे। कई बार तो कहानी की किताबें मैडम इसीलिए दे देती थीं जिससे वह कक्षा से

बाहर जाकर कुछ दूसरे कामों में जुड़ सकें। बच्चे आपस में एक दूसरे को भी अधिकतर ये रे, वो रे कहकर बुलाते थे। आपस में एक दूसरे के बैग को छुपाना, कापी को छुपाकर रख देना जैसी प्रक्रियाएँ पूरे समय चलती थीं, और मैडम दिनभर शिकायतों के निपटारे करतीं।

शिक्षक के साथ मिलकर परिचय गतिविधि के उद्देश्य और महत्त्व पर चर्चा

हमने अपने इस काम में मुख्य रूप से शिक्षक के साथ मिलकर परिचय गतिविधि के उद्देश्य और इससे बच्चे कैसे आपस में एक दूसरे के सहयोग से सीखते हुए आगे बढ़ेंगे, इसपर चर्चा की। इस गतिविधि की पहली शर्त हमने शिक्षक के साथ यह रखी कि वे पूरे समय कक्षा में बच्चों के साथ रहें। जब पहली शर्त को शिक्षकों ने स्वीकार किया तो आगे कैसे काम करेंगे इस योजना पर काम किया गया। योजना का पहला हिस्सा था, सभी बच्चों के नाम के चार्ट और पट्टियाँ बनाई जाएँ और कक्षा में डिस्प्ले किया जाए और दूसरा हिस्सा था हरेक बच्चे की रुचि की किसी एक वस्तु का उसके कार्ड में पीछे चित्र के साथ नाम लिखा जाए। तीसरा हिस्सा बच्चे के नाम के पहले अक्षर से बहुत सारे शब्दों का एक जाल बनाने का था। शिक्षक इस गतिविधि को कैसे करवाएँगे, साथ ही हर दिन शिक्षक की क्या भूमिका होगी और जिस दिन मैं नहीं जाऊँगी उस दिन शिक्षक की भूमिका क्या होगी, इसपर भी बात की गई। इस गतिविधि में न सिर्फ़ बच्चों के आपसी परिचय की बात होगी बल्कि शिक्षक की भागीदारी और उससे बच्चों का परिचय भी शामिल होगा।

गतिविधि : आपसी परिचय

सबसे पहली आवश्यकता थी कक्षा में बच्चों के बीच आपस में एक दूसरे के साथ घुलने-मिलने और अपने दोस्तों व साथियों को उनकी मौलिकता के साथ स्वीकार्यता और सहजता बनाने की, दूसरी बच्चों के बीच आपसी खुलेपन और सहज माहौल निर्माण की एवं तीसरी आवश्यकता शिक्षकों को बच्चों के साथ इस तरह के काम को करने के लिए तैयार करने की थी। इसके लिए हमें यह गतिविधि काफ़ी उपयुक्त लगी और इसे शिक्षकों के साथ बहुत अलग तरह से करने की योजना बनाई। जैसे– हमारी पहली योजना थी बच्चों के नाम के साथ किसी ऐसी वस्तु को जोड़ना जो उनके परिवेश में और आसपास अधिक समय उपलब्ध रहती हो, यानी जिसके साथ बच्चे अधिक समय गुज़ारते हों और अपने नाम को उस वस्तु के साथ जोड़ने में भी सहज महसूस करें। हमने शिक्षकों के साथ मिलकर बच्चों से चर्चा की कि उन्हें क्या पसन्द है क्या नहीं, और क्या सबसे अधिक पसन्द है। जैसे– दीपक ने बताया कि उसे लाल भाजी पसन्द है, लेकिन लड्डू सबसे ज़्यादा पसन्द हैं। किरण ने कहा कि उसे पूड़ी पसन्द है, लेकिन कुम्हड़ा सब्ज़ी सबसे अधिक पसन्द है। वहीं ज्योति ने बताया कि उसे टीवी देखना पसन्द है, लेकिन डांस करना सबसे अधिक पसन्द है। हमने बोर्ड पर एक कोने में बच्चों के नाम के साथ उनकी पसन्द और नापसन्द को लिखा, साथ ही उसे अलग से दो तीन चार्टों में लिखकर लगा दिया। हमने जो कार्ड बनाए थे वह भी काफ़ी कलरफ़ुल थे। किनारे पर रंगीन चमकीला टेप लगाकर कार्ड के पीछे हमने, जो बच्चों की सबसे पसन्द की चीज़ थी, उसे पूरे शब्द के रूप में लिखा और उस लिखे हुए के नीचे उसी वस्तु का चित्र भी बना दिया। हमने चार्ट पर भी बच्चों के नाम के साथ शब्द को लिखा, चित्र भी बनाया और फिर सभी कार्डों को एक डिब्बे में रख दिया।

अपने कार्ड से हुई दिन की शुरुआत

हरेक दिन सुबह कक्षा में आते ही बच्चे सबसे पहले अपने नाम का कार्ड उठाते और लिखा हुआ पढ़ते। शुरुआत के 15 दिन कई बच्चों ने ग़लत ही पढ़ा लेकिन हमने उन्हें पढ़ने दिया। बच्चे लिखे हुए को जैसे भी पढ़ते, सभी बच्चे उसे दोहराते थे। बच्चों के पढ़ने के बाद मैं, या जिस दिन मैं नहीं जाती, शिक्षक उसे ठीक करके पढ़ते। इससे बच्चे ख़ुद ही यह समझने लगे कि वह जो पढ़ते हैं उसमें कुछ ग़लत कर

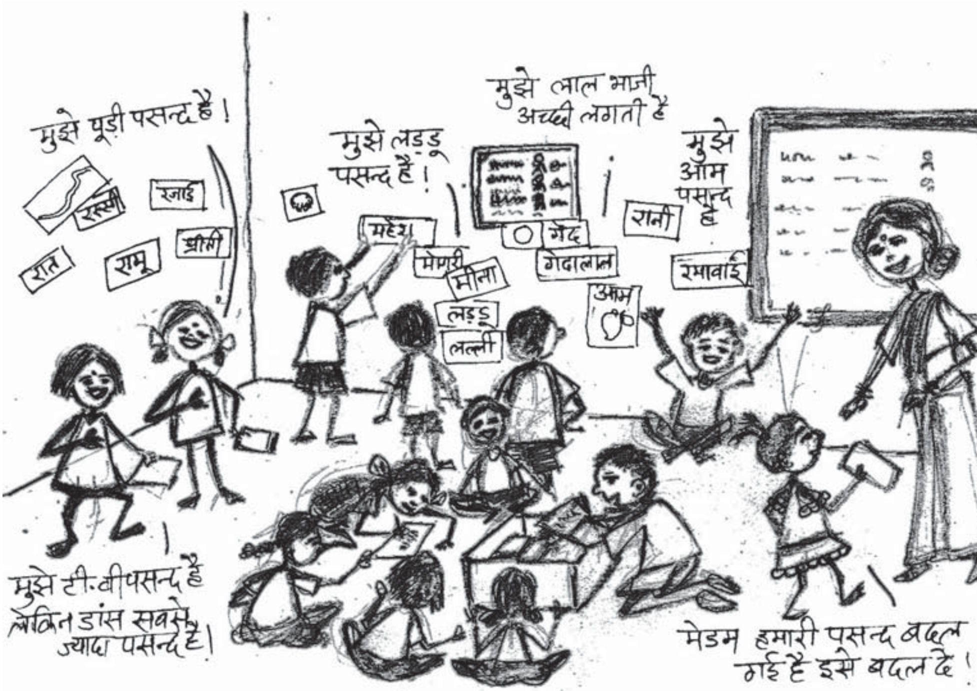

चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

रहे हैं और 15 दिन में बच्चों ने ख़ुद ही उसे सुधार लिया। अब मैं जो पढ़ती थी, बच्चे उसे ही पढ़ने लगे थे। इसके पहले बच्चे अपना नाम तक नहीं पढ़ पाते थे, लेकिन जो चित्र बना था उसके आधार पर अपना ही नहीं अपने साथी का नाम भी पहचान गए थे।

बदलने लगा मंजर

इस गतिविधि से बच्चे सुबह के दो घण्टे बहुत ख़ुश रहने लगे और कक्षा में उनकी पूरी भागीदारी रहने लगी। अभी इन दो घण्टों में कोई बच्चा इक्की नहीं जाता, साथियों को छेड़ना या एक दूसरे का झोला उठाकर फेंकने जैसी बातें भी नहीं होती हैं। तीसरे सप्ताह से हमने इस गतिविधि के माध्यम से ही बच्चों के पढ़ने के साथ-साथ लिखने के कौशल पर भी काम शुरू किया। इसमें हमने पहले कौशल, बच्चों के नाम में कितनी ध्वनियाँ हैं, पर काम शुरू किया। अब बच्चों के नाम पढ़ने में एक काम और शामिल हो गया। पहले मैं हरेक बच्चे का नाम ध्वनि के साथ बोलती और उसके बाद बच्चा अपने नाम को वैसे ही बोलता। ध्वनि के साथ-साथ नाम के पहले, बीच के और अन्त के अक्षरों पर काम करना शुरू किया। इसके साथ ही हरेक बच्चे के नाम के पहले अक्षर से क्या-क्या शब्द बन सकते हैं उसके शब्द जाल बनाने शुरू किए। एक बात जो इस काम के केन्द्र में थी वह थी, किसी भी काम को मौखिक करके नहीं छोड़ना यानी जो भी काम होता था उसे बोर्ड पर लिखना, फिर चार्ट बनाकर लगाना और चार्ट बनाने में बच्चों को शामिल करना। जैसे– देखो दीपक, लड्डू का चित्र तुम ही बनाओगे और कैसे लिखेंगे उसे अपने कार्ड से देखकर लिखोगे भी। बच्चों को मज़ा आने लगा इस काम में, और कब वह लड्डू को बिना देखे भी लिखने लगे। लड्डू में पहला अक्षर 'ल' है और 'ल' से और क्या-क्या शब्द बन सकते हैं, उन्हें कहीं भी लिखा हुआ देखकर पहचानने लगे। मुझे और शिक्षक को अहसास तो था कि बच्चे सीख रहे हैं, लेकिन वह इतनी जल्दी और इस रफ़्तार से आगे बढ़ेंगे इसका अन्दाज़ा नहीं था। अभी बच्चों के नाम के पीछे जो शब्द लिखा गया था उसे

मिलाकर पढ़ना शुरू कर चुके थे, जबकि हमने अभी इसे शिक्षण में उतनी गहराई से शामिल नहीं किया था। बस सुबह एक बार बच्चों के साथ मिलकर पढ़ते ज़रूर थे। अभी हम सिर्फ़ बच्चों के नाम के अक्षरों और ध्वनियों पर काम कर रहे थे। हर दिन सुबह की गतिविधि में हम सभी बच्चों के नाम और उनकी पसन्द पर लिखे गए शब्द को पढ़ते भी थे और चर्चा भी करते थे।

पसन्द भी बदलने लगी

अभी बहुत रोचक बात यह हो रही थी कि रोज़ बच्चों की पसन्द और बहुत अधिक पसन्द बदल रही थीं। अब बच्चे यह कहने लगे थे कि कार्ड के पीछे में जो उनकी पसन्द लिखी है उसे बदल दिया जाए क्योंकि अभी तो उनको कुछ और पसन्द है। शायद उनको लग रहा होगा कि हम इसे जितनी जल्दी पढ़ना सीख जाएँगे उतनी ही जल्दी ये बदला जा सकेगा। एक सुबह तो बच्चों ने अपने मन की बात ज़ाहिर कर ही दी। मेरा जैसे ही कक्षा में जाना हुआ सबसे पहली फ़रमाइश ज़ोर शोर से सामने आई कि मैडमजी, अभी हमारी पसन्द बदल गई है तो आप हमारे नाम के साथ में जो लिखा है उसे बदल दीजिए, अब तो हमें पढ़ना भी आ गया है। एक-एक कर सभी बच्चे पढ़कर सुनाने लगे। जब बच्चे पढ़ रहे थे, हमें और शिक्षक को समझ में आ रहा था कि कौन-सा बच्चा अन्दाज़े से पढ़ रहा है और कौन पूरे शब्द को सही पढ़ पा रहा है, क्योंकि जब बच्चे पढ़ रहे थे तो बोल कुछ अलग रहे थे और उँगली कहीं और थी। हमने कहा, ठीक है इस सप्ताह और इसी को लिखा रहने देंगे उसके बाद दूसरा कार्ड बनाएँगे।

पढ़ना-लिखना हुआ मज़ेदार

बच्चों की सहमति और साझेदारी से हमने समूह बनाए और कहा कि हमें सिर्फ़ अपना कार्ड नहीं पढ़ना, दूसरे साथी का भी कार्ड पढ़ना है और देख-देख कर लिखना भी है। इस काम को अगले 8 से 10 दिन करेंगे फिर नए कार्ड बनाएँगे। बच्चे सहमत हो गए। इस चर्चा के बाद एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण घटना हुई। बच्चे अभी लंच करने देर से आए और लंच करके एक मिनट भी नहीं रुके और अपने-अपने समूह में जाकर पढ़ना शुरू कर दिया। पूरे 8 दिन तक बच्चे खेल के मैदान में भी अपने कार्ड साथ रखते और एक दूसरे को लिखे हुए शब्द के साथ बुलाते। अब सभी बच्चे उसे न सिर्फ़ अच्छे-से पढ़ने लगे बल्कि हरेक अक्षर को ध्वनि के रूप में पहचानने लगे थे। जैसे– दीपक को लड्डू पसन्द है। दी, प, क तीन ध्वनि हैं और 'द' व 'दी' के अन्तर बताने लगे थे।

अब आई किताब की बारी

इस परिचय गतिविधि के साथ काम करते हुए लगभग तीन महीने होने वाले थे। अभी तक हमने बच्चों से यह नहीं कहा था कि किताब निकालो और इस पाठ को पढ़ो। बच्चों के लंच के बाद एक पीरियड था जिसे हमने 'आओ किताब खोलें, चित्र देखें, चित्र पढ़ें' नाम से तय किया था। इस पीरियड में हम क्लास में होते तो थे लेकिन साइलेंट अवलोकनकर्ता की भूमिका में। हमने देखा कि जब हम परिचय गतिविधि में बच्चों से कक्षा में बात करते थे, बच्चे किताब के उदाहरण ख़ुद ही लाने लगे थे। जैसे– किचन के जो सामान हैं, उसमें बच्चे बताते थे कि गणित की किताब में भी ये पाठ है। किसी बच्चे के नाम के पीछे आम का चित्र बना है तो बच्चे बताते कि 'आम की टोकरी' एक कविता है। कई बच्चे पूरी कविता सुनाते थे, या जब चित्र बनवाते थे जो उनके कार्ड के पीछे बना है, कई बच्चे कहते कि किताब में बना है, उसमें से देखकर बना लें क्या।

हमने कहा, बिलकुल किताब खोल लो और देखकर भी बना सकते हो और बिना देखे भी, आपको जैसा अच्छा लगे। इस पूरे काम में हमने बहुत व्यवस्थित ढंग से और प्लानिंग के साथ स्कूल की लाइब्रेरी और झोला लाइब्रेरी की किताबों को भी उपयोग में लिया। जैसे– बड़े-बड़े चित्र वाली किताबों में अपने नाम का पहला अक्षर व दूसरा अक्षर खोजो और आपके कार्ड में लिखे अक्षर एवं इस खोजे हुए अक्षर में क्या अन्तर है, इसकी पहचान करो।

किताब से दोस्ती

'हमसे दोस्ती करो' परिचय गतिविधि की मुख्य गतिविधि थी। इस गतिविधि में बच्चे को किसी एक किताब को अपना दोस्त बनाना था, उसे घर ले जाना था और अपने बड़े भाई-बहन, माँ-पापा के साथ बैठकर पढ़ना था। अगले दिन स्कूल आकर क्या सुना, क्या पढ़ा, उसे बताना था। बच्चे किताबों को देखें, उलटें-पलटें, किताबों से जुड़ें, इसके लिए एक पीरियड तय किया गया था। इस पीरियड में बच्चे लाइब्रेरी में उपलब्ध किताबों को अपनी रुचि के अनुसार उठाते, समूह में पढ़ते और आपस में चर्चा करते। कक्षा में इस समय शिक्षक का होना आवश्यक था, जबकि पहले यह शिक्षकों की प्रेक्टिस में था कि जिस समय बच्चे लाइब्रेरी में होते शिक्षक ऑफ़िस में बैठकर कुछ दूसरे काम कर रहे होते थे, लेकिन अब शिक्षकों की इस प्रेक्टिस में बदलाव हुआ। कक्षा एक के स्तर की किताबों को अलग करके बच्चों की कक्षा में एक कोना बनाया गया, जिसमें लाइब्रेरी की कहानियों के अतिरिक्त *दैनिक भास्कर न्यूज़पेपर* 'बाल भास्कर' को भी रखा गया। बाल भास्कर को एक बार तो हमने रखा लेकिन अगली बार से इसे अपने घर से लाने की ज़िम्मेदारी प्रीति नाम की एक बालिका ने ली।

प्रीति न सिर्फ़ बाल भास्कर लाती बल्कि उसमें जो पहेलियाँ होतीं उन्हें कक्षा में सभी बच्चों को सुनाती। वह ख़ुद भी पहेलियों को पढ़ना नहीं सीखी थी लेकिन घर से याद करके आती थी और 'आज की बातचीत' में सबसे पहले खड़ी हो जाती पहेली बुझाने के लिए। सभी बच्चे प्रीति का कक्षा में इन्तज़ार करने लगे और ये पहेलियाँ भी बच्चों को आपस में चर्चा करने और मिलकर सीखने का माध्यम बन गईं।

इस काम में हमने जो देखा और पाया

1. बच्चे ख़ुद से पढ़ने-लिखने की तरफ़ आगे बढ़े।
2. लगभग सभी बच्चे एक साथ मिलकर सीखने की कोशिश में शामिल थे।
3. कक्षा में 23 बच्चे थे और सभी पढ़ना-लिखना सीखने में आगे बढ़ रहे थे। यह बात अलग थी कि कुछ बहुत बेहतर मतलब एकदम सही लिखते थे और कुछेक में एक दो अक्षर की ग़लती रहती थी। जैसे— 80 प्रतिशत तुकबन्दी वाले शब्द लिखते थे : आम, जाम, दाम, दीपक, दीमक, कटोरी,

चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

तिजोरी, निमोरी, आदि। 80 प्रतिशत बच्चे दीमक को सही लिखते थे लेकिन 20 प्रतिशत बच्चे दीमक को 'दिंमक' लिखते थे। इन बच्चों के साथ आगे 'दी' और 'दि' के अन्तर पर ध्वनि के माध्यम से काम किए जाने की योजना है।

हम जिस निष्कर्ष तक पहुँच पाए

1. कक्षा में बच्चों का मन लगा, और बच्चे अपनी किताबों और कक्षा में लगे मटेरियल के साथ जुड़ने लगे, जैसे– लंच के बाद या ख़ाली समय में भी बच्चे ख़ुद से उन चार्टों को पढ़ते हुए दिखाई देते थे।
2. बच्चे सीखने-सिखाने की इस प्रक्रिया में शिक्षक के साथ मिलकर रास्ते बना सकते हैं। इस मान्यता में शिक्षकों का विश्वास बनना शुरू हुआ और कुछ का विश्वास पहले से ज़्यादा मज़बूत हुआ।
3. शिक्षक और बच्चों के बीच रिश्ते सहजता की तरफ़ बढ़े। अभी शिक्षक बच्चों और उनकी बातों को कक्षा में स्पेस देने का महत्त्व समझने लगे और 'आज की बातचीत' जैसी गतिविधि को उन्होंने अपनाया और उसपर काम करना शुरू किया है।
4. शुरुआती दिनों में परिचय गतिविधि किताब या पाठ्यपुस्तक में भी है लेकिन उसपर कैसे काम किया जा सकता है इसकी एक हद तक की समझ शिक्षकों में बनी है।
5. हमारे (अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के) साथ उस स्कूल के सभी शिक्षकों का रिश्ता पहले से बेहतर हुआ है और वॉलंटरी टीचर फ़ोरम (वीटीएफ़) जैसी गतिविधियों में उस स्कूल के शिक्षकों की भी भागीदारी होने लगी है।
6. परिचय गतिविधि को कक्षा 3 की शिक्षिका ने भी अपनाया क्योंकि उनके सामने चुनौती थी कि कक्षा के 70 प्रतिशत बच्चे कुछ बोलते ही नहीं थे फिर इनके साथ काम कैसे किया जाए। उनका कहना था कि इस गतिविधि के माध्यम से अभी 80 प्रतिशत बच्चों का रिश्ता हमारे साथ बेहतर हुआ है और अब ज़्यादातर बच्चे अपनी बात को बिना संकोच कक्षा में साझा करने का प्रयास करने लगे हैं।
7. शिक्षिका ने इस अनुभव को संकुल स्तरीय स्कूलों के अन्य शिक्षकों के साथ साझा किया जिससे एक दूसरे स्कूल में भी यह गतिविधि शुरू होने की जानकारी मिली।

परिचय गतिविधि पर काम करते हुए यह महसूस किया कि इससे बच्चों के साथ घुलने-मिलने और मिलकर सीखने का रिश्ता क़ायम होता है। शिक्षकों में यह समझ व स्वीकार्यता बनती है कि कक्षा की शुरुआत हल्के-फुल्के माहौल में कैसे की जाए, जिससे बच्चों को पूरे दिन सीखने का सहज माहौल मिलता रहे। इससे बच्चों में पियर ग्रुप लर्निंग यानी मिलकर सीखने का सहज वातावरण तैयार होता है। यदि कक्षा में परिचय गतिविधि के बारे शिक्षकों के साथ व्यवस्थित योजना बनाई जाए तो हम बच्चों में पढ़ने-लिखने के कौशलों को सुगमता से पुष्ट कर सकते हैं।

कमला बाजपेई का शिक्षा में 20 वर्षों से ज़्यादा का अनुभव रहा है। वे शाला और समुदाय के बेहतर रिश्तों और जेंडर के मुद्दे पर 'लोकमित्र' रायबरेली, उत्तर प्रदेश के साथ लम्बे समय तक जुड़ी रही हैं। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन रायपुर, छत्तीसगढ़ में कार्य कर रही हैं। यहाँ प्राथमिक स्कूल के शिक्षकों के साथ जुड़ाव बनाते हुए बच्चों में प्रारम्भिक गणित व पढ़ने-लिखने के कौशलों को विकसित करने में भूमिका निभाती हैं।

सम्पर्क : kamla.bajpai@azimpremjifoundation.org